।। ॐ श्री साईनाथाय नमः।।
।। ॐ श्री सद्गुरुनाथ दादाय नमः।।

तत्वबोध

श्री साईकल्प आध्यात्म संस्था **श्री साई शक 44**
नई दिल्ली **29 जुलाई 2026**
अंक –21

गुरुपूर्णिमा

गुरुमार्ग क्या है? जीवन में सभी को कभी न कभी समस्याऐं आती ही है। प्रापंचिक समस्याऐं हल हो इसलिए हम भी श्री गुरु के पास आते है लेकिन केवल ऐहिक सुख प्राप्ति के लिए हमारा गुरुमार्ग नहीं है बल्कि हम भक्तों के जीवन में जो जन्मतः दोष है तथा कर्मों के कारण जो कमियाँ है वह किस तरह से दूर हो सकती है ताकि हम सुख–शांति–समाधान(संतोष) से जीवन व्यतीत कर सके इसका मार्गदर्शन करना मतलब गुरुमार्ग है।

मनुष्य जन्म प्राप्त होना बहुत कठिन है। महत् प्रयासों के बाद हमें जन्म प्राप्त हुआ है और सौभाग्य से ही श्री गुरु मिले है लेकिन प्राप्त हुए जीवन में हमने क्या प्रबंध करना है इसका विचार हम नहीं करते। हम केवल अधिक से अधिक ऐहिक सुख कैसे प्राप्त हो सकता है इसका विचार और उसके अनुसार प्रयत्न करते है। हमारे आस–पास जो व्यक्ति ऐहिक साधनों में हमसे बेहतर है वह ज्यादा सुखी है इस तरह का विचार करके हम उनका अनुकरण करने के प्रयत्न करते रहते है और अधिक ऐहिक सुख प्राप्ति की इच्छा से ही हम देवधर्म तथा गुरुमार्ग का अवलंब करते है।

आज तक जो सुख हमें प्राप्त हो चुके है क्या उनका विचार या उनके प्रति हमारे मन में संतोष है? हम आज भी क्यों दुखी, अशांत एवं असंतुष्ट है? अगर हम ईश्वर या श्री गुरु से ऐहिक सुख मांगने की जगह हमारे जीवन में जो कमियाँ है उन्हें दूर करने का आशीर्वाद मांगते है तो हम सुखी एवं संतुष्ट जीवन का अनुभव कर सकते है। जीवन में सुख प्राप्त होने का मापदंड केवल ऐहिक सुख है यह हमारा विचार गलत है। हमारे जीवन में क्या कमी है यह हमारे गुरु को ज्ञात होता है। श्री गुरु के सानिध्य में आने से हमारी कमियाँ ना गिनाते हुए श्री गुरु अपने आशीर्वाद से वे कमियाँ भर निकालते है। आज के समय में इसके लिए सेवा करना तथा नित्य ॐकार साधना करना आवश्यक है।

हमारे जीवन की कमियों को दूर करने का एक आसान साधन मतलब श्री गुरुपादुका पूजन है। गुरुमार्ग की उपासना में श्री गुरु पादुकाओं का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। श्री गुरुपादुकाओं में उनके देहिक अवतार का सार होता है। इसीलिए प.पू. पंतमहाराज की अनेक आरतियों में गुरुचरणों की महिमा का वर्णन है। श्री गुरु ने सामान्य मानव की तरह देह धारण करके जो उपासना, तपश्चर्या, तीर्थयात्रा आदि सेवा, साधना की होती है उसमें से प्राप्त हुई दैविक शक्ति उनके चरणों में संग्रहित हो जाती है। श्री दत्त गुरु के क्षेत्रों में भी पादुका पूजन ही करते है। श्री गुरु के दो पावन चरणों में बायां चरण चंद्रबिंब का प्रतीक है और उनका दायां चरण सूर्यबिंब का प्रतीक है। इन गुरुचरणों की सेवा से त्रिगुणात्मक शक्ति और तेजतत्व का लाभ हमें मिलता है। इहलोक और परलोक पर जिनकी सत्ता है ऐसी गुरुशक्ति का प्रतीक ये युगल चरण हमें पूर्ण कर्म का लाभ करा देते है और ऐसा करते हुए हमारे जीवन की सभी कमियाँ भर देते है। इसीलिए श्री साईशक प्रतिमा में गुरुचरणों के प्रतीक माध्यम द्वारा हम गुरुपादुकाओं का पूजन करते है।

प.पू. बाबा और वं. दादा जी के आशीर्वाद से आज गुरुपूर्णिमा के इस शुभ दिवस से हमारे दिल्ली कार्यकेंद्र पर श्री गुरुपादुका का अभिषेक एवं पूजन विधि पुनः आरंभ किया जा रहा है। पूर्व परंपरा अनुसार सभी भक्तजन विशेष अवसरों पर (जैसे जन्मदिवस, विवाह सालगिरह, इत्यादि) श्री गुरुपादुका अभिषेक करके गुरुकृपा आशीर्वाद का लाभ ले सकते है। हमारे दिल्ली कार्यकेंद्र पर सन् 1999 से श्री गुरुपादुकाओं का अधिष्ठान है। आज के इस शुभ दिवस पर प.पू. बाबा, वं. दादा और प.पू. विभूतियों से अनन्य भाव से यही प्रार्थना है कि श्री गुरुपादुकाओं के अभिषेक एवं पूजन से प्राप्त होने वाली गुरुशक्ति से हम सभी भक्तों के जीवन की कमियाँ दूर हो जाऐं और हमें सुख, शांति, समाधान(संतोष) प्राप्त हों।

।। शुभम् भवतु।।